IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–7388, p- ISSN: 2320-737x Volume 14, Issue 5 Ser. 1 (Sept. – Oct. 2024), 63-65
www.iosrjournals.org

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधरित शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 पूजा सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा शास्त्र)
बाबा प्रसिद्ध नारायण महाविद्यालय, बगथरी, मुरारा, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश : *वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधरित शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सैद्धांतिक व मस्तिष्किय शिक्षा को तरजीह दी जा रही है। लेकिन समाज के लिए अत्यंत आवश्यक मानवीय हृदय में मूल्यों के विकास की सर्वाधिक अनदेखी व उपेक्षा हो रही है। ऐसे में सामाजिक अंतर्विरोधों, आपसी द्वन्दों व अन्य विघटनकारी नकारात्मक प्रवृतियों की चुनौतियों का सामना करने के लिए मूल्य शिक्षा अनिवार्य है। इसे एक अतिरिक्त विषय के रुप में नहीं वरन् अन्य विषयों में सूक्षम व गहन विषय वस्तु के रुप में पाठयक्रम में सम्मिलित कर नयी पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत किया जाए तथा उसके लिए समस्त शिक्षण योजनाओं में पूर्ण रुप से जोर डाला जाए। मूल्य शिक्षा के लिए उपयुक्त व्यूह रचनाओं व तकनीकियों का प्रयोग किया जाए ताकि हमारा भविष्य सभ्य, सुसंस्कृत व सुखमय हो। मूल्यों के द्वारा जहाँ व्यक्ति में साहसीपन, प्रतिष्ठा तथा सृजनात्मकता, उपलब्धि की भावना का विकास होता है, वहीं अपने समाज के प्रति आकर्षण तथा समर्पण की भावना का विकास होता है। मानवीय मूल्य ही नैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में वृद्धि करते हैं। जिससे व्यक्ति पूर्ण रूप से समाजिकता को प्राप्त करता है। सांप्रतिक संसार मानवीय मूल्यों की कमी के कारण अत्यन्त गंभीर संकट की स्थिति से गति होने वेफ स्पष्ट लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं। पुनश्च मानव के पास आध्यात्म के विषय में सम्यक् अवबोध भी नहीं है जिससे वह अपना सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास साधिक कर सके क्योंकि आध्यात्म ही मूल्यों को संवर्मित करने का एकमात्र सशक्त सामान है। प्राचीन काल की शिक्षा परंपरा में मूल्यों को समंवित कर आचार्य शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे, परन्तु वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि उभरते छात्रा व शिक्षक दोनों में चारित्रिक कलुषता स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रही है। एतत्सहित समाज में भी इसी नैतिक मूल्य भावजन्य चारित्रिक स्खलन के कारण अनेकानेक समस्याए दिन–प्रतिदिन दिखाई दे रही हैं।*

महत्वपूर्ण शब्द : *मूल्य, आध्यात्म शिक्षा, मानव विकास*

प्रस्तावना :–

हमारे जीवन में जीवन मूल्य शिक्षा का बहुत महत्व है। मूल्य शिक्षा के माध्यम से हम व्यक्ति समाज में सकारात्मक मूल्यों के क्षमताओं और अन्य प्रकार के व्यवहार को विकसित करता है जिसमें वह रहता है'। मूल्य शिक्षा का अर्थ है, दैनिक जीवन में कौशल, व्यक्तित्व के सभी दौरों को समझना। इसके माध्यम से छात्र जिम्मेदारी, अच्छी या बुरी दिशा में जीवन का महत्व, लोकतांत्रिक तरीके से जीवन यापन, संस्कृति की समझ, महत्वपूर्ण सोच आदि को समझ सकते हैं। मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिक नैतिक और लोकतांत्रिक समाज बनाना है। आधुनिक भारत सदियों पुरानी परंपराओं के पुनरुत्थान के दौर से गुज़र रहा है, जहाँ मूल्य–आधारित शिक्षा या नैतिक शिक्षा बड़े पैमाने पर वापस आ रही है। इसलिए, आज हर माता–पिता अपने बच्चों को ऐसी बेहतरीन शिक्षा देने का प्रयास करते हैं जो सिर्फ़ किताबों तक सीमित न हो बल्कि उनके समग्र विकास की ओर ले जाए। उनके लिए, शिक्षा के साथ–साथ मूल्य शिक्षा भी ज़रूरी है। मूल्य शिक्षा के माध्यम से हम बच्चों में मजबूत चरित्र और मूल्यों का विकास कर सकते हैं, जिससे वे अपने ज्ञान का उपयोग सभी के लाभ के लिए कर सकें। इसलिए, स्कूल और अन्य शैक्षणिक संस्थान मूल्य शिक्षा के महत्व को समझ रहे हैं और इसे अपने पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बना रहे हैं। नैतिक शिक्षा या मूल्य–आधारित शिक्षा प्रदान करने में स्कूलों की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता।

वर्तमान परिदृश्य में जहाँ जीवन की गति बहुत तेज है और हर मोर्चे पर कड़ी प्रतिस्पर्धा है, ऐसे में मूल्य शिक्षा का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। शिक्षाविदों और शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षकों को मूल्य शिक्षा में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है ताकि वे भावी पीढ़ी को यह शिक्षा प्रभावशाली तरीके से दे सकें।

मानव विकास का वर्तमान स्वरूप उसके अतीत की झांकी प्रस्तुत करता है। वर्तमान की अनेक श्रेयस वस्तुएं अपने अतीत की परिष्कृत रूप होती है। भारतीय संस्कृति में भी अतीत के सद्विचार, गुण एवं मूल्यों को पोषित एवं पल्लवित करके उनका सुन्दर प्रतिरूप वर्तमान विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है। यहां संस्कृति का मूल्य, प्राण, धर्म, एवं सदाचार सदैव से

ही धारण योग्य रहा है। किसी भी मनुष्य के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान होता है, क्योंकि इन्ही के आधार पर सही गलत, उचित–अनुचित की परख की जाती है। परिवार समाज तथा विद्यालय के अनुरूप ही एक मनुष्य में सामाजिक गुणों तथा मूल्यों का विकास होता है। मूल्य वह मानक होते हैं जिसके द्वारा किसी कार्य के लक्ष्य चुने जाते हैं। सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री तथा समाज कार्य के प्रोफेसर– डॉ0 राधाकमल मुकर्जी ने अपनी विख्यात पुस्तक – श्जीम ेजतनबजनतम वि अंसनमश में दी गयी परिभाषा में स्पष्ट किया कि– मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत इच्छाएँ और लक्ष्य होते हैं जिन्हें कंडीशनिंग, सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया से आत्मसात् किया जाता है। जो व्यक्ति की अपनी पसन्दें, मानक और महत्वाकांक्षाएँ बन जाते हैं। मूल्य व्यक्तित्व को दिषा निर्देषित करते हैं।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता और महत्व

मूल्य आधारित शिक्षा छात्रों को सही दृष्टिकोण और सिद्धांतों के साथ बाहरी दुनिया का सामना करना सिखाती है और छात्रों के समग्र व्यक्तित्व का विकास भी करती है। ऐतिहासिक रूप से, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली नैतिक मूल्यों और शिक्षाओं पर आधारित थी। यहाँ छोटे बच्चों को ईमानदारी, दयालुता, सच बोलने का महत्व, दूसरों की मदद करना और ऐसे कई मूल्यों से परिचित कराया जाता था। भारत की पंचतंत्र की कहानियाँ और उनसे जुड़े कार्टून और एनिमेशन मूल्य शिक्षा पर आधारित हैं। मूल्य शिक्षा युवा विद्यार्थियों के भविष्य के जीवन के लिए एक रोडमैप तैयार करती है, जो नैतिक और नैतिक मूल्यों के निर्माण पर केन्द्रित है, ताकि उनका जीवन अधिक सार्थक हो सके, साथ ही यह सुनिश्चित हो सके कि उनका चरित्र मजबूत हो। आम तौर पर, मूल्य शिक्षा तीन स्तरों पर दी जाती है, आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक। ये सभी मूल्य आपस में जुड़े हुए हैं क्योंकि वे छात्रों को खुद से, दूसरों से और उनके तत्काल पारिस्थितिकी तंत्र से जोड़ते हैं ताकि एक अधिक शांतिपूर्ण अस्तित्व की ओर ले जाया जा सके जो केवल व्यक्तिगत लक्ष्यों के बजाय बड़ी तस्वीर को देखता है।

मूल्य शिक्षा का महत्व

माता–पिता के बाद गुरु का को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरु अर्थात शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बर्तन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है। गुरू किसी भी छात्र को ऐसी शिक्षा देकर एक बेहतर मनुष्य बना देता है। एक शिक्षक ही विद्यार्थी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से रुबरु कराता है। एक शिक्षक का सबसे मुख्य काम यह है कि वह अपने विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर शिक्षा दे। शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण होना चाहिये। वो विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखे बल्कि उसे जीवन के व्यवहारिक ज्ञान की भी शिक्षा दे। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी से समान होता है शिक्षक उसे जैसा ढालेगा वैसा ढल जायेगा। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। नैतिक मूल्यों की जो शिक्षा वो विद्यार्थी को देगा उसका प्रभाव विद्यार्थी पर जीवन पर्यंत बना रहेगा। यहीं से उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होगी। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

एक मजबूत चरित्र का निर्माण और आत्म–जागरूकता को उत्प्रेरित करनाः मूल्य शिक्षा के माध्यम से, बच्चे सही और गलत के बीच अंतर करना, जोखिम उठाना और चुनौतियों का सामना करना सीखते हैं। यह जिम्मेदारी की भावना, सकारात्मकता और अंततः, एक अधिक सचेत व्यवहार को भी प्रोत्साहित करता है जो आत्म–जागरूकता की भावना से उपजता है। मानवीय मूल्यों को स्थापित करनारू दया, सहानुभूति, सहयोग, करुणा कुछ ऐसे प्रमुख मूल्य हैं जो मूल्य शिक्षा के संपर्क में आने पर युवा शिक्षार्थियों में स्थापित किए जाते हैं। ये मूल्य महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे छात्रों को जिम्मेदार नागरिक और परिवर्तन निर्माता बनने में मदद करते हैं जो न केवल अपना भविष्य तय करेंगे बल्कि समुदाय, राष्ट्र और ग्रह के सामंजस्यपूर्ण भविष्य का भी फैसला करेंगे।

सामाजिक जिम्मेदारी और खुशहाली की भावनाः जब छात्र इस बात से अधिक अवगत होते हैं कि उनके कार्यों का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, तो वे अपने कार्यों में अधिक जिम्मेदार होते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि उनके पास एक सहयोगी मानसिकता है जो विविधता और प्रतिक्रिया के लिए खुली है। इससे न केवल उनका समग्र विकास होता है बल्कि उनके भावनात्मक और शारीरिक कल्याण का विकास भी होता है।

स्कूल–जीवन और कक्षा में सकारात्मक प्रभावः मूल्य शिक्षा से प्रभावित छात्र अधिक अनुशासन–उन्मुख होते हैं और अपने सहपाठियों के साथ सहयोग करने, दूसरों का सम्मान करने और सभी स्थितियों को शांति से संभालने जैसे नियमों का पालन करते हैं। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता हैरू मूल्य शिक्षा विद्यार्थी के मन में जीवन के प्रति

सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। ये कुछ ऐसे कारक हैं जो स्कूलों में छात्रों के बीच मूल्य शिक्षा के महत्व को उजागर करते हैं।

मूल्य शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

मूल्य शिक्षा जो किसी समाज एवं देश के चहुँमुखी विकास का आधार है इसको आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक वर्ग को आगे आना होगा। इससे मूल्य आधारित शिक्षा के दिव्यत्व से प्रेरित ऐसे मानवों का निर्माण होगा जो आचारवान, समाज सेवी, राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत एवं शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो। सृजनषीलता व कार्य के लिए प्रतिबद्धता ये अच्छे शिक्षक में होना अनिवार्य है ऐसे शिक्षक सदा विद्यार्थियों के लिए श्रद्धा व सम्मान के पात्र होते हैं। ऐसे शिक्षकों के प्रति विद्यार्थियों का विष्वास बढ़ता है। शिक्षक विद्यार्थियों को अशुभ, अवांछनीय, असामाजिक एवं उद्देश्य रहित दिशा में कदम बढ़ाने से रोक सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की सुसंस्कारित व जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए एक उपयुक्त वातावरण तो प्रदान करते ही हैं। साथ–साथ विद्यार्थियों को नकारात्मक वातावरण के दुष्परिणामों से भी सचेत करते हैं। शिक्षक के प्रत्येक कार्य में चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक कोई भी क्यों न हो, छात्रों को उसमें राष्ट्रीय व नैतिक मूल्यों के संस्कार प्रतिबिम्बित होने चाहिए इससे छात्रों में अच्छे चरित्र का निर्माण व अच्छे संस्कारों का सृजन होगा तथा नई पीढ़ी में सत्यनिष्ठा, परोपकार, देश सेवा, कर्तव्यपरायणता आदि शाश्वत मानवीय मूल्यों का समुचित विकास होगा। शिक्षक को छात्रों का आदर्श बनने की आवश्यकता है जिसके सम्पर्क में आने से लोहा भी कुन्दन बन जाता है।

शिक्षक और विद्यार्थी ठान ले तो शिक्षा में नैतिक मूल्यों की वापसी भलीभाँति हो सकती है। शिक्षक को शिक्षण के दौरान ऐसी भाषा शैली का प्रयोग करना चाहिए जिससे भारत की विविधता, एकता और अखंडता को चोट न पहुँचे। शिक्षक राष्ट्र निर्माण में डटे रहते हैं, नई पीढ़ि को सँवारने की जिम्मेदारी काफी संवेदनशील होती है। शिक्षक से विद्यार्थी प्रेरित होते हैं, उनका अनुकरण करते हैं इसलिए शिक्षक के व्यक्तित्व, वेश–भूषा, खान–पान, व्यवहार और विचार का शानदार होना चाहिये। शिक्षक बच्चे को क्या पढ़ाते हैं इससे ज्यादा ध्यान देने वाली बात है कि कैसे पढ़ाते हैं। शिक्षण शैली ही शिक्षा की आत्मा है। जब तक यह विद्यार्थी अनुकूल न होगा, शिक्षा हासिल करना नीरस लगता रहेगा।

शिक्षक स्वयं में ताउम्र सकारात्मक बदलाव लाते हैं, वही बदलाव अपने विद्यार्थियों में हो– इसके लिए वे प्रयत्नशील रहते हैं। यह केवल सिलेबस और परीक्षाओं से संभव नहीं होता है। हर इंसान कम से कम नियम को मानना चाहता है, अनुशासन और नैतिकता सच पूछिये तो बहुत कम को पसंद है। सभी को लगता है कि वही सबसे अधिक नैतिक है। यहीं नैतिकता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जरूरी हो जाती है। शिक्षा सभी प्रकार के पेशेवरों को नैतिकता समझाती है। सही–गलत, सच–झूठ, अच्छा–बुरा इन सबका ज्ञान हमें शिक्षा के द्वारा ही हासिल होता है। इन्हीं ज्ञान के सहारे मनुष्य कभी स्वयं को रोकता है तो कहीं स्वयं को टोकता है। अतः शिक्षा में नैतिक मूल्यों की उपयोगिता बढ़ जाती है। इसलिए कहा जाता है – "शिक्षा वह है जो स्कूल में सीखी गई बातों को भूल जाने के बाद भी बची रहती है।"

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास से लेकर देश के आर्थिक विकास तक में शिक्षा के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। हम क्या हैं और क्या हो सकते हैं यह हमें प्राप्त हो रही शिक्षा से तय होता है। पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु, शिक्षण–अधिगम सामग्री, शिक्षकों की शिक्षण शैली, पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या ये सब नैतिक मूल्यों के कारण ही मानक हो रहे होते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा उत्तरोत्तर गुणवत्तापूर्ण होती चली जाती है। व्यक्तिगत हित से ज्यादा जरूरी है परिवार का हित, परिवार के हित से ज्यादा जरूरी है समाज का हित, और सबसे ज्यादा जरूरी है देशहित व मानवहित! शिक्षा जब नैतिकता के तमाम मापदंडों को स्वयं में समाहित कर ले तब वसुधैव–कुटुंबकम और सत्यमेव जयते की अवधारणा मूर्त हो रही होती है। और इसी से सबका कल्याण हो रहा होता है।

उपसंहार :–

समसामयिक परिदृश्य में मूल्यों का शैक्षिक महत्व है। मानव जीवन में सफलता के लिए मूल्यों का विशेष स्थान है। मूल्यों को अर्जित करके तथा सीख करके उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। मूल्य सकारात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं। जिससे स्वयं समस्याओं का अनुभव करके तनाव दूर करने, द्वन्दों एवं दुविधाओं को दूर करने सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन करके तथा वर्तमान एवं भविष्य में आपे वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु सक्षम हो सकें। मूल्य विद्यार्थियों के उत्साह में संचार करके श्रेष्ठता के साथ कार्य सम्पन्न करने की क्षमता को बढाने तथा असामयिक वातावरण में उचित निर्णय लेने हेतु सफल बनाते हैं। मूल्य मनोशारीरिक रूप से स्वस्थ्य जीवन का अवसर भी

प्रदान करती है। जिससे व्यक्ति को मानसिक, धार्मिक, व्यावहारिक तथा राजनैतिक रूप से सफलता के अवसर प्राप्त हो सके।

सन्दर्भ :–

- वालिया, डॉ. जे.एस. (2005) 'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार' पॉल पब्लीसर्ज, जालन्धर.
- शर्मा, आर. ए. (2005) 'फिलोसिफकल प्रोबलम ऑफ एजुकेशन' सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ.
- नेशनल कॅरीकुलम फ्रेमवर्क– 2005, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. चेलन्जसं ऑफ एजुकेशन (1985)
- डॉल्टन, जे.सी., क्रासबॉय, पी.सी. (2010) 'हॉय वी टीच करेक्टर इन कॉलेजरू ए रिटरोस्पेक्टिव ऑन सम रिसेन्ट हायर एजुकेशन इनसियटिव डेट प्रमोट मोरल एंड सिविक लर्निंग' जनरल ऑफ कॉलेज एण्ड करेक्टर
- वेल्यु एजुकेशन (2010) 'वेल्युस ऐजुकेशन फोर आस्ट्रेलियन स्कूलिंग'.
- कोठारी अतुल, (2009): मूल्यों की शिक्षा, नई दिल्ली.
- गुप्ता, एस0 पी0 (2015): अनुसंधान संदर्शिका (सम्प्रत्यय कार्यविधि एवं प्रविधि), शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद.
- जीमेन. जी0 एस0 (1997): स्टडी आफ सोशल, रीलीजियस एण्ड मोरल वैल्यू आफ स्टुडेन्ट आफ क्लास ग्प एण्ड देयर रीलेशनसीप वीथ मोरल कैरेक्टर, ट्रेट एण्ड पर्सनैलिटी एडजस्टमेन्ट, पी–एच0 डी0 एजूकेशन अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद.
- पाण्डेय रामशकल, (2011): मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा.
- पाल, पी0 सी0 (1996): ए0 स्टडी आफ वैल्यू ओरिएन्टेशन्श ऑफ एडोलसेन्स व्याय एण्ड गर्ल, पी–एच0 डी0 साइकोलाजी एम0 एस0 युनिवर्सिटी, बड़ौदा.